देवालयमें देवताके प्रत्यक्ष दर्शनसे पूर्वके कृत्योंका अध्यात्मशास्त्र

भूमिका

'देवालय'का अर्थ है, देवताका आलय, अर्थात जहां भगवानका साक्षात वास है । दर्शनार्थी देवालयमें इस श्रद्धासे जाते हैं कि वहां जानेपर उनकी प्रार्थना भगवानके चरणोंमें अर्पित होती है और उन्हें मन:शांतिका अनुभव होता है । कहते हैं, 'भगवान भावके भूखे हैं ।' देवताके दर्शन किसी भी पद्धतिसे, अपितु भक्तिभावसे करनेसे ईश्वरकृपाकी अनुभूति होती है । सामान्य भक्तमें इतना भाव नहीं होता; उसके लिए देवताके दर्शन (आध्यात्मिक दृष्टिसे) उचित पद्धतिसे करने आवश्यक हैं ।

दीपके कांचके आवरणपर जमी कालिखको स्वच्छ करनेपर ही प्रखर प्रकाश झलकता है । देवताके प्रत्यक्ष दर्शनसे पूर्व स्वयंपर बने रज-तमरूपी कालिखका आवरण दूर कर, अंतरमें भावरूपी ज्योत जगाना आवश्यक है । तब ही ईश्वरसे प्रक्षेपित चैतन्यके प्रकाशका एवं ईश्वरीय कृपा-प्रसादका हमें परिपूर्ण लाभ होता है । देवताके दर्शनकी उचित पद्धतिसे यह कैसे साध्य होता है, इसकी जानकारी इस ग्रंथमें दी है । केवल उचित पद्धति ही नहीं, अपितु उसके अध्यात्म-शास्त्रीय आधारके सूक्ष्म स्तरीय सिद्धांत भी इस ग्रंथमें प्रस्तुत हैं । फलतः इस पद्धति एवं धर्मशास्त्रके प्रति भी श्रद्धा उत्पन्न होनेमें सहायता मिलेगी ।

हाथ-पैर धोकर देवालयमें क्यों प्रवेश करना चाहिए, देवताके दर्शनके लिए जाते समय भाव कैसा हो; देवताके दर्शन करते समय प्रार्थना क्या करनी चाहिए, देवताकी परिक्रमा कितनी कैसे एवं क्यों करनी चाहिए, देवताके चरणोंमें धन, नारियल आदि अर्पण करनेका महत्त्व क्या है, ऐसे विविध प्रश्नोंके अध्यात्म-शास्त्रीय उत्तर इस ग्रंथमालामें दिए हैं । मानवके अंतिम ध्येय - 'ईश्वरप्राप्ति'को साध्य करनेकी दृष्टिसे हिन्दू धर्मके प्रत्येक धार्मिक कृत्यके पीछे कितना गहन एवं सूक्ष्म विचार किया है, इसका दर्शन भी इस ग्रंथके पठनसे पग-पगपर होगा ।

इस ग्रंथमें विशद उचित पद्धतिनुसार आप देवताके दर्शन करें तथा अपने संबंधियों अथवा पडोसियों आदि का प्रबोधन करें, तो हम समझेंगे कि इस ग्रंथको लिखनेका प्रयोजन पूर्ण हुआ । श्री गुरुचरणोंमें हमारी यही प्रार्थना है । **– संकलनकर्ता**

प्रस्तुत ग्रंथकी अनुक्रमणिका

[कुछ वैशिष्ठ्यपूर्ण सूत्र (मुद्दे) '*' चिह्नसे दर्शाए हैं ।]

१. देवालयका महत्त्व २५

* देवालयके कारण दशदिशाओंका चैतन्यमय होना २५

२. देवालयमें दर्शन करनेका महत्त्व २७

* देवालयमें दर्शन करनेकी प्रक्रियासे संभावित व्यष्टि एवं समष्टि साधना २७

३. मंदिरकी अपेक्षा 'देवल' या 'देवालय' शब्दका प्रयोग क्यों करें ? २८

४. देवालयकी रचनाके सात स्तर, तत्संबंधी तत्त्व एवं उनका महत्त्व २८

५. देवालयमें दर्शनकी उचित पद्धति (संपूर्ण कृत्य) ३०

* देवालयमें प्रवेश करनेसे पहले आवश्यक कृत्य
* देवालयकी सीढियां चढना

६. देवालयमें प्रवेश करनेसे पूर्व आवश्यक कृत्य व उनका धर्मशास्त्र ३३

६ अ. देवालयमें प्रवेश करनेसे पूर्व शरीरपर धारण की हुई चर्मकी वस्तुएं क्यों उतार देनी चाहिए ? ३३

६ आ. देवालयमें प्रवेश करनेसे पूर्व जूते-चप्पल क्यों उतारें ? ३३

६ इ. पैर धोकर देवालयमें प्रवेश क्यों करना चाहिए ? ३९

६ ई. पैर धोनेके उपरांत स्वयंपर जल क्यों छिडकें ? ३९

६ उ. देवता एवं गुरुके दर्शन तथा पूजा, नमस्कार, जप, हवन और

परिक्रमा करते समय गलेमें वस्त्र न लपेटनेका कारण ४१

६ ऊ. कुछ देवालयोंमें ऐसा नियम क्यों है कि 'पुरुष अंगरखा (शर्ट) उतारकर देवालयमें प्रवेश करें ? ४२

६ ए. देवालयमें दर्शनके लिए जाते समय सिर ढकना उपयुक्त है अथवा अनुपयुक्त ? ४२

६ ऐ. देवालयके प्रवेशद्वार, सभामंडप एवं गर्भगृहमें प्रवेश करनेसे पूर्व द्वारको नमस्कार क्यों करें ? ४३

६ ओ. देवालयके प्रांगणसे कलशके दर्शन क्यों करें ? ४५

७. देवालयमें दर्शन हेतु प्रांगणसे सभामंडपकी ओर जानेकी पद्धति ४७

७ अ. नमस्कार करते हुए जाना

७ आ. प्रांगणसे देवालयकी ओर जाते समय भाव कैसा होना चाहिए ? ४७

८. देवालयकी सीढियां चढना ४९

८ अ. देवालयकी सीढियोंको नमन करनेसे हमें क्या लाभ होता है ? ४९

८ आ. एक हाथसे नमस्कार न करनेका विधान होते हुए भी देवालयकी सीढीको एक हाथसे नमन करना क्या उचित है ? ५१

९. सभामंडपमें प्रवेश करना ५१

* सभामंडपके द्वारको दूरसे नमस्कार करना ५२

* सभामंडपमें प्रवेश करते समय सीढियोंको हाथसे स्पर्श कर नमस्कार करना ५२

* सभामंडपमें प्रवेश करते समय प्रार्थना करना ५२

१०. सभामंडपसे गर्भगृहकी ओर जानेकी पद्धति ५३

१० अ. सभामंडपके दाहिनी ओरसे प्रवेश न कर; अपितु वहांसे बाहर निकलनेका कारण ५३

१० आ. सभामंडपकी बाईं ओरसे प्रवेश करनेका कारण ५३

११. देवता-दर्शनसे पूर्व आवश्यक कृत्य एवं अध्यात्मशास्त्र ५४
११ अ. देवालयका घंटा यथासंभव क्यों न बजाएं ? यदि बजाना ही हो तो उसकी उचित पद्धति क्या है ? ५४
१२. देवालयमें दर्शनके संदर्भमें कुछ अनुभूतियां ५५
'देवालयमें देवताके प्रत्यक्ष दर्शन अंतर्गत कृत्योंका अध्यात्मशास्त्र' इस ग्रंथकी संक्षिप्त विषयसूची ६२

शास्त्रीय परिभाषामें धर्म व अध्यात्मकी शिक्षा देनेवाली दृश्यश्रव्य-चक्रिकाएं

।। सनातन धर्मसत्संग ।।

- अध्यात्मशास्त्र समझ लें !
- अध्यात्मसंबंधी गलतधारणाएं
- अध्यात्मविषयक शंकासमाधान
- साधना क्यों, कौनसी व कैसे करें ?
- बोधप्रद अनुभूतियां व आधारभूत शास्त्र
- धार्मिक कृतियां क्यों व कैसे करें ?
- सूक्ष्मसंबंधी समझने हेतु प्रयोग
- धर्मजागृति इत्यादिके संदर्भमें घटनाएं

इन स्तंभोंके साथ-साथ बंदनवार लगाना, रंगोली, जन्मदिन, आरती उतारना, तिलक लगाना, दीपप्रज्वलन जैसी धार्मिक कृति करनेसंबंधी दृश्यपट व शास्त्रीय मार्गदर्शन !

त्यौहार, व्रत व उत्सव मनानेकी योग्य पद्धतियां व उनके शास्त्रकी जानकारी देनेवाले **विशेष धर्मसत्संग**

।। विशेष धर्मसत्संग ।। (दृश्यश्रव्य-चक्रिकाएं)

दीपावली

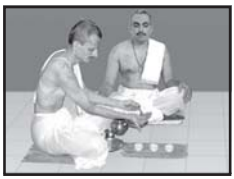
महालय श्राद्ध

नवरात्रि